चौधरी मातूराम आर्य

एक संक्षिप्त परिचय

चौधरी मातूराम आर्य

एक संक्षिप्त परिचय

© प्रकाशक

संस्करण : 2012

प्रकाशक
चौधरी रणबीर सिंह शोध पीठ
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

मुद्रक :
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय प्रैस, रोहतक

दो शब्द

चौधरी रणबीर सिंह को अनेक ढ़ंग से बयान किया जाता है। वर्तमान के आईने में देखें तो वे एक सिद्धान्तपरक राजनीतिज्ञ थे, जिनका जीवन सात्विक था, तड़क-भड़क से दूर और तेजस्वी! स्वतन्त्रता आन्दोलनों के चश्में से परखा जाए तो वे उस संघर्ष के जीवन मूल्यों की विरासत के पालनहार थे। वे अपने यशस्वी पिता चौधरी मातूराम आर्य की पताका के सही सही पहरेदार साबित हुए।

चौधरी मातूराम आर्य, वह जानी-मानी हस्ती थे, जिन्होंने एक अंधेरे युग से बाहर आने की लौ को अपने क्षेत्र में प्रज्जवलित किया और उसकी रक्षा की, ताकि आने वाली पीढ़ियों की राह रोशन हो।

चौधरी रणबीर सिंह को समझने के लिए उस विरासत को जानना होगा, जिसे चौधरी मातूराम ने बड़ी तनमयता से एक दिन रौपा था और जिसके आदर्श को गुणकर घर का होनहार बालक रणबीर सिंह आगे बढ़ा।

चौधरी मातूराम आर्य पर यह प्रारम्भिक पुस्तिका का प्रकाशन इस उद्देश्य से किया जा रहा है, ताकि नयी पीढ़ी को उस पूर्वज से रूबरू करवाया जा सके, जिसने उनकी राह को संवारा।

चौधरी रणबीर सिंह शोध केन्द्र,
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक।

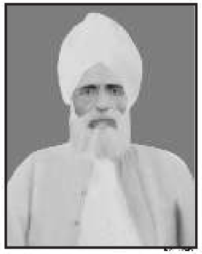

यशस्वी चौधरी मातूराम आर्य

(1865 – 1942 ई.)

पिता का नाम : चौधरी बख्तावर सिंह

दादा का नाम : चौधरी हरदन सिंह

माता का नाम : श्रीमती धन्नो देवी

पत्नी का नाम : श्रीमती मामकौर

सन्तान :

1. डाक्टर बलबीर सिंह
2. चन्द्रावती
3. चौधरी रणबीर सिंह
4. चौधरी फतेह सिंह

जन्म स्थान : गाँव सांघी, जिला रोहतक (हरियाणा)

चौधरी मातूराम आर्य

जन्म

यशस्वी चौधरी मातूराम का जन्म सन् 1865 ईस्वी में रोहतक जिले के ऐतिहासिक गाँव सांघी में महान् समाजसेवी चौधरी बख्तावर सिंह के घर हुआ।

सांघी गाँव में पैतृक हवेली।

चौधरी मातूराम जी की पैतृक हवेली की छत से लिया गया गाँव सांघी का आवरण छायाचित्र।

प्रतिष्ठित घराना

सांघी गाँव का यह प्रतिष्ठित परिवार रहा है। चौधरी बख्तावर सिंह अपने समय के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उनके पिता चौधरी हरदन सिंह भी अपने समाजसेवी कार्यों के लिए क्षेत्र में प्रसिद्ध थे। उनके दादा चौधरी भीखू सिंह एक ईमानदार तहसीलदार थे। ऐसे परिवार में चौधरी मातूराम का जन्म हुआ। उनकीं माता श्रीमती धन्नों देवी एक उच्च संस्कारों और धार्मिक प्रवृति की महिला थीं।

शिक्षा

उस समय उच्च शिक्षा की सुविधा नहीं थी। रोहतक जिला में केवल 48 स्कूल ही थे, जिनमें अधिकतर उर्दू की चौथी कक्षा तक ही पढ़ाई करवाई जाती थी। चौधरी मातूराम ने अपने पैतृक गाँव में ही वर्नेकुलर (उर्दू) की चौथी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की। उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा और पिताश्री चौधरी बख्तावर सिह की अचानक मृत्यु के बाद सारी जिम्मेदारी उन पर आ गई।

वे स्वयं अधिक शिक्षित नहीं थे, किन्तु शिक्षा के महत्व को समझते थे। इसीलिए उन्होंने समाज में न केवल शिक्षा के व्यापक प्रचार प्रसार के लिए बड़े स्तर पर अभियान चलाया, शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना एवं संचालन भी किया और अपने बच्चों को उच्च शिक्षा व संस्कार दिए।

पारिवारिक दायित्व

चौधरी मातूराम बेहद संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी थे। सन् 1895 की सर्दियों में माल अफसर किसी कार्यवश सांघी में आए हुए थे। उन्होंने चौधरी बख्तावर सिंह को महकमें से संबंधित विषयों पर विचार-विमर्श के लिए बुलाया। उस समय चौधरी बख्तावर सिंह सांघी जैल के जैलदार थे। चौधरी बख्तावर सिंह ने अफसर को आने की सूचना भिजवा दी और बरामदे में हुक्का पीने वाले लोगों के साथ बैठ गया।

इसी बीच अफसर के कुछ सिपाही भी हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। जब एक सिपाही हुक्के का कश मारने झुका तो बदकिस्मती से उसका हाथ बन्दूक की ट्रिगर पर लग गया और गोली सीधे चौधरी बख्तावर सिंह के सीने पर जा लगी। हाहाकार मच गया। गाँव उमड़ आया। लोग गुस्से में थे।

दुर्घटना की सूचना मिलने पर युवा मातूराम भी यहां पहुंच गए। हालात का पता चलते ही दोषी सिपाही पर किसी तरह की कोई कानूनी कार्यवाही करने से उन्होंने मना कर दिया।

वैवाहिक जीवन

चौधरी मातूराम की पहली शादी जिला रोहतक के गाँव फरमाणा में हुई। दूसरी शादी बलम गाँव में हुई। लेकिन, सन्तान की प्राप्ति नहीं हुई। उन्हें तीसरी शादी करनी पड़ी। तीसरी शादी दादरी के सूबेदार जवाहर सिंह फौगाट की सुपुत्री मामकौर से हुई।

सुसंस्कारवान सन्तानें

चौधरी मातूराम की चार सन्तानें, तीन लड़के व एक लड़की हुई :

1. डॉक्टर बलबीर सिंह : डैंटल डॉक्टर बने। तीन पुत्र व एक बेटी।
2. चन्द्रावती : बेटी को पढ़ने के लिए भेजा, जिससे उस समय स्त्री शिक्षा की राह खुली।
3. चौधरी रणबीर सिंह : रामजस कॉलिज से स्नातक। पाँच पुत्र।
4. चौधरी फतेह सिंह : एफ.ए. तक पढ़े। दो पुत्र, पाँच बेटियां।

चौधरी रणबीर सिंह लोकतंत्र के इतिहास में सात अलग-अलग सदनों के सदस्य रहे। संविधान निर्माण और हरियाणा प्रदेश के निर्माण में अहम भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता के लिए जैलदारी कुर्बान

पिता चौधरी बख्तावर सिंह का अकस्मात् स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् अल्पायु में ही चौधरी मातूराम ने पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों को कुशलतापूर्वक निभाया। आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा के चलते सरकार ने आपको पहले 1.12.1991 को नम्बरदार, फिर 16.06.1892 को आला नम्बरदार और इसके बाद 6.11.1894 को सांघी जैल का जैलदार पद सौंपा।

चौधरी मातूराम की आर्य समाजी विचारधारा और स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी से अंग्रेजी सरकार जल्द ही परेशान हो उठी। परिणामस्वरूप, सरकार ने उनसे 4.05.1907 को (लगभग 11 साल बाद) जैलदारी का पद छीन लिया। इससे वे तनिक भी विचलित नहीं हुए और आर्य समाज तथा स्वतंत्रता आन्दोलनों में पहले से भी अधिक सक्रिय हो गए। सन् 1914 में तत्कालीन लै0 गर्वनर इबटसन ने चौधरी मातूराम को 'काला पानी' (अण्डेमान) भेजने की संस्तुति की। लेकिन जनता में उठने वाले आक्रोश को भांपकर सरकार ने अपने इस कदम को वापिस हटाना पड़ा।

चौधरी मातूराम परम देशभक्त, कट्टर आर्यसमाजी, निडर, कर्मठ, कर्त्तव्य-परायण, दूरदृष्टा, संघर्षशील व असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। वे अपने सिद्धान्तों पर खड़े रहना जानते थे।

سند تقرری ذیلدار

ذیلدار کے فرائض حسب ذیل ہیں

चौधरी मातूराम की सनद तकरीरी जैलदारी, 1 नवम्बर, 1896

भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत

चौधरी मातूराम परम राष्ट्रवादी थे। उन्होंने अपने समाज को कुरीतियों से मुक्त करने की उत्कृष्ट इच्छा शक्ति का परिचय दिया। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में बड़ी अह्म भूमिका अदा की। आर्य समाज की अलख जगाई। सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया। साथ ही स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ ग्रामीण हरियाणा को जोड़ने में अग्रणीय भूमिका निभाई। इसी क्रम में उनकी लाला लाजपतराय, लाला मुरलीधर, सरदार अजीत सिंह (अमर शहीद भगत सिंह के चाचा) खान अब्दूल गफ्फार खाँ, चौधरी छोटूराम, पंडित मोतीलाल नेहरू, ठाकुर भार्गव दास, स्वामी श्रद्धानंद जैसे अनेक जुझारू स्वतंत्रा सेनानियों के साथ घनिष्ठ मित्रता बन गई।

सन् 1905-07 की समयावधि में लाला लाजपत राय को साथ लेकर सरदार अजीत सिंह ने जुझारू किसान आन्दोलन चलाया और काले पानी की सजा भुगती। जब वे रोहतक आये तो चौधरी मातूराम के साथ गाँव सांघी में ठहरे।

चौधरी मातूराम के शहीद-ए-आजम भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह व क्रांतिकारी चाचा अजीत सिंह से घनिष्ठ पारिवारिक संबंध थे। बाद में, इस परम्परा को सुपुत्र चौधरी रणबीर सिंह ने खूब निभाया।

स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान

चौधरी मातूराम ने स्वतंत्रता आन्दोलन में अहम योगदान दिया। 28 दिसम्बर, 1885 को मुम्बई में कांग्रेस की स्थापना हुई। रोहतक कांग्रेस की पहली कांफ्रेस 12 अक्तूबर, 1888 को रोहतक में हुई। इस कांफ्रेस के पाँच प्रमुख नेता थे, चौधरी मातूराम, चौधरी पीरू सिंह, श्री बाबू राम, श्री तोरबाज खान और श्री समरचन्द। ये पाँचों रोहतक कांग्रेस के संस्थापक थे। उल्लेखनीय है कि उस समय चौधरी मातूराम की आयु मात्र 23 वर्ष ही थी।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 16 फरवरी, 1921 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के रोहतक पधारने पर एक विशाल जनसभा का आयोजन चौधरी मातूराम जी की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें 25000 से अधिक लोगों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया था। चौधरी मातूराम के प्रति जनता के लगाव और प्यार को देखकर राष्ट्रपिता ने सराहा और चौधरी मातूराम की प्रशंसा भी की।

चौधरी मातूराम देश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के निरन्तर संपर्क में रहे और उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता प्राप्ति की राह पर चले। उन्होंने देहात के जन-जन में राष्ट्रीयता की भावना का बखूबी संचार किया।

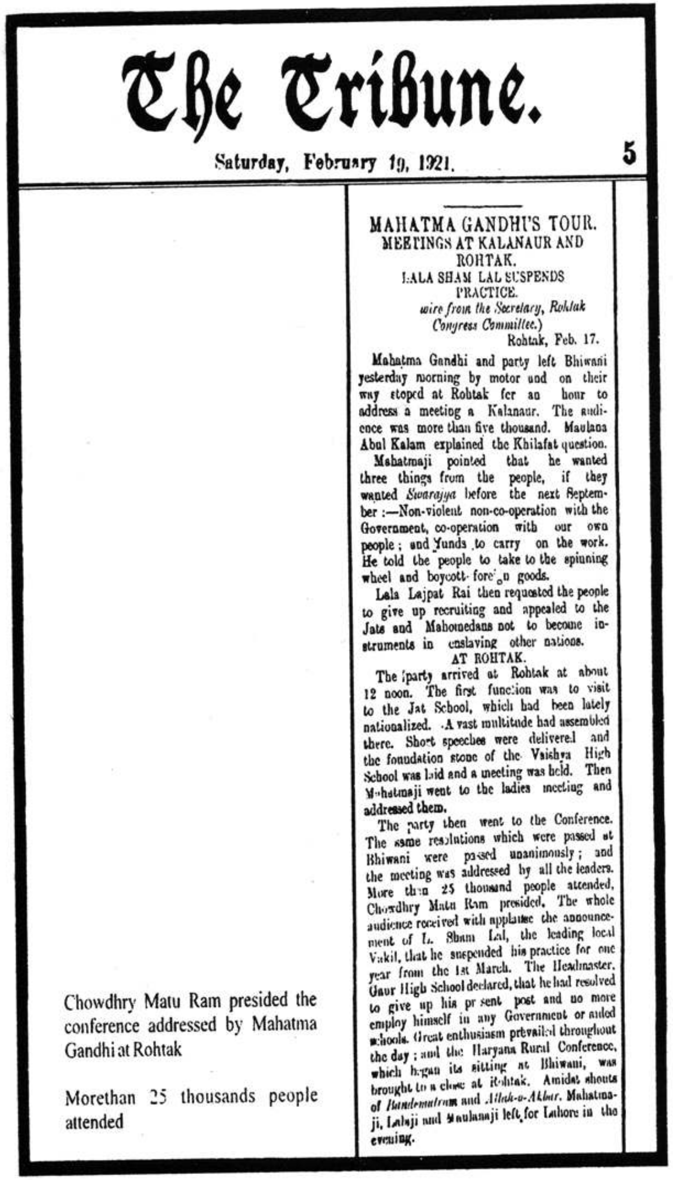

The Tribune.

Saturday, February 19, 1921. 5

MAHATMA GANDHI'S TOUR.
MEETINGS AT KALANAUR AND ROHTAK.
LALA SHAM LAL SUSPENDS PRACTICE.

wire from the Secretary, Rohtak Congress Committee.)

Rohtak, Feb. 17.

Mahatma Gandhi and party left Bhiwani yesterday morning by motor and on their way stoped at Rohtak for an hour to address a meeting a Kalanaur. The audience was more than five thousand. Maulana Abul Kalam explained the Khilafat question.

Mahatmaji pointed that he wanted three things from the people, if they wanted *Swarajya* before the next September :—Non-violent non-co-operation with the Government, co-operation with our own people ; and funds to carry on the work. He told the people to take to the spinning wheel and boycott foreign goods.

Lala Lajpat Rai then requested the people to give up recruiting and appealed to the Jats and Mahomedans not to become instruments in enslaving other nations.

AT ROHTAK.

The party arrived at Rohtak at about 12 noon. The first function was to visit to the Jat School, which had been lately nationalized. A vast multitude had assembled there. Short speeches were delivered and the foundation stone of the Vaishya High School was laid and a meeting was held. Then Mahatmaji went to the ladies meeting and addressed them.

The party then went to the Conference. The same resolutions which were passed at Bhiwani were passed unanimously ; and the meeting was addressed by all the leaders. More than 25 thousand people attended. Chowdhry Matu Ram presided. The whole audience received with applause the announcement of L. Sham Lal, the leading local Vakil, that he suspended his practice for one year from the 1st March. The Headmaster, Gaur High School declared, that he had resolved to give up his present post and no more employ himself in any Government or aided schools. Great enthusiasm prevailed throughout the day ; and the Haryana Rural Conference, which began its sitting at Bhiwani, was brought to a close at Rohtak. Amidst shouts of *Bandematram* and *Allah-o-Akbar*, Mahatmaji, Lalaji and Maulanaji left for Lahore in the evening.

Chowdhry Matu Ram presided the conference addressed by Mahatma Gandhi at Rohtak

Morethan 25 thousands people attended

विधान परिषद चुनावों में नैतिक जीत

चौधरी मातूराम ने नवम्बर, 1923 में विधान परिषद का चुनाव लड़ा। उस समय हरियाणा में कुल 8 चुनाव क्षेत्र थे। उन्होंने उत्तरी-पश्चिमी ग्रामीण रोहतक विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा। इस चुनावी क्षेत्र में गोहाना, रोहतक व सांपला तहसील का कुछ भाग शामिल था। चौधरी मातूराम ने यह चुनाव बेहद ईमानदारी के साथ लड़ा। लेकिन, विरोधी गुट ने चुनाव जीतने के लिए हर औछे हथकण्डे अपनाए और चुनावों में भारी धांधली के कारण चौधरी मातूराम को 554 वोटों से हार का सामना करना पड़ा।

चौधरी मातूराम ने इस चुनावी धांधली को कोर्ट में चुनौती दी। उनके केस की पैरवी प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपतराय ने की। कोर्ट में न्यायाधीश श्री एम.वी. बीड़े, एम.एम. केकेय व डी. सी. राली के समक्ष कुल पन्द्रह लोगों की गवाही हुई, जिसके बाद यह सिद्ध हो गया कि चुनावों में जमकर धांधली हुई थी। कोर्ट ने चुनाव चुनाव रद्द कर दिया और अंततः चौधरी मातूराम की नैतिक जीत हुई। चौधरी मातूराम मूल्यों की राजनीति करते थे और कभी भी मानसिक संकीर्णता नहीं रखते थे। कोर्ट ने प्रतिद्वन्द्वी को 3000 रूपये का हर्जाना अदा करने की सजा सुनाई। लेकिन, चौधरी मातूराम ने सहृदयता का परिचय देते हुए यह राशि कभी नहीं ली। यह राशि आज भी अदालत में जमा है।

प्रतिष्ठित पदों पर आसीन

चौधरी मातूराम ने कई प्रतिष्ठित पदों को सुशोभित किया। वे पहले सांघी गाँव में नम्बरदार बने और फिर लगभग 11 साल तक सांघी जैल के जैलदार रहे। उनकीं अटूट व उल्लेखनीय राष्ट्रसेवा और समाज में अपार प्रतिष्ठा को देखते हुए उन्हें वर्ष 1924 में जिला रोहतक कांग्रेस के प्रधान पद पर बैठाया गया। इसके अलावा चौधरी मातूराम ने कांग्रेस के विभिन्न महासम्मेलनों और विशेष आयोजनों में कई प्रकार की महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाई और डेलीगेट रहे।

शिक्षा के प्रचार–प्रसार में अमूल्य योगदान

चौधरी मातूराम ने समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दिया। उन्होंने समाज में शिक्षा की अलख ऐसे समय जगाई, जब लोगों को शिक्षा के महत्व का ही नहीं पता था और कॉलेज तो दूर स्कूलों का भी नितांत अभाव था। चौधरी मातूराम स्वयं चौथी कक्षा तक पढ़े हुए थे, लेकिन, उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए जो बीड़ा उठाया, वह इतिहास में अविस्मरणीय व अनुकरणीय मिसाल कायम कर गया। बेटियों को पढ़ाने की शुरूआत की। आज रोहतक यदि शिक्षा का हब है तो उसकी नींव चौधरी मातूराम ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर रखी थी।

'आर्य वैदिक संस्कृत हाई स्कूल' के अग्रणी संस्थापक

7 मार्च, 1911 को बरोणा गाँव में एक सर्वखाप महापंचायत आयोजित की गई। इसमें समाजोत्थान के लिए 28 मुख्य प्रस्ताव पारित किए गए, जिसमें शिक्षा के प्रचार–प्रसार का प्रथम मुद्दा था। इस प्रस्ताव को अमलीजामा पहनाने के लिए चौधरी मातूराम ने दिनरात एक कर दिया और अंततः वर्ष 1913 में रोहतक में पहला स्कूल 'आर्य वैदिक संस्कृत हाई स्कूल' खुला। चौधरी मातूराम ने इस हाई स्कूल की स्थापना में अनुकरणीय योगदान दिया और संस्थापक प्रधान बने। चौधरी मातूराम के साथ–साथ चौधरी छोटूराम, डॉक्टर रामजीलाल, हैडमास्टर बलदेव सिंह, चौधरी देवी सिंह, सेठ छाजूराम इस स्कूल के संचालक थे। डा. रामजीलाल के सुपुत्र और चौधरी मातूराम के भतीजे रणजीत सिंह इस स्कूल के पहले अवैतनिक हैडमास्टर बने। वर्ष 1913 में इस स्कूल का नाम बदलकर 'जाट हीरोज़ मैमोरियल एंग्लों संस्कृत हाईस्कूल' कर दिया गया। यह छोटा सा पौधा आज विराट वट वृक्ष बन चुका है और इसकी छत्रछाया में शिक्षा अर्जित करने वाले विद्यार्थियों की कतार लंबी है।

'जाट एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल' के संस्थापक प्रधान बने

9 जून, 1914 को 'जाट हीरोज़ मैमोरियल एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल' का पंजीकरण 'जाट एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल' के नाम से करवाया गया। चौधरी छोटूराम इसके उपप्रधान और डॉक्टर रामजीलाल सचिव बने। इसके साथ ही चौधरी बलदेव सिंह को हैडमास्टर बनाया गया। इस संस्था की संस्थापना में अह्म योगदान के लिए चौधरी मातूराम को संस्थापक प्रधान का सम्मान दिया गया। रोहतक के तत्कालीन उपायुक्त श्री किलवर्ट ने चौधरी मातूराम को शिक्षा के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए 18 दिसम्बर, 1914 को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित भी किया।

जाट हीरोज़ मैमोरियल एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल' के उप-प्रधान बने

वर्ष 1920 में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के सिद्धान्तों का पालन करते हुए 'जाट एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल' की मान्यता अंग्रेजी सरकार को वापिस लौटा दी गई और पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर व पंजाब शिक्षाबोर्ड से नाता तोड़ लिया गया। इसके बाद लाला लाजपतराय द्वारा लाहौर में स्थापित राष्ट्रीय विश्वविद्यालय से संबम्ध जोड़ा गया और स्कूल को नया नाम दिया गया, 'जाट नैशनल हाई स्कूल'।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने इस कदम की सराहना की थी। इसी 'जाट नैशनल हाई स्कूल' में 16 फरवरी, 1921 को एक विशाल जनसभा को संबोधित करने गांधी जी आए थे। इस जनसभा की अध्यक्षजा चौधरी मातूराम ने की थी, जिसमें 25000 लोगों ने भाग लिया था।

इस समय दो शिक्षण संस्थाएं अस्तित्व मे आ गई थीं। पहली चौधरी मातूराम के नेतृत्व में 'जाट नैशनल हाई स्कूल' और दूसरी चौधरी छोटूराम द्वारा स्थापित 'जाट हीरोज़ मैमोरियल स्कूल'। विडम्बना यह थी कि चौधरी छोटूराम के स्कूल के पास मान्यता थी, लेकिन भवन नहीं था और चौधरी मातूराम के पास भवन था, लेकिन मान्यता उन्होंने लौटा दी थी। ऐसे में बिरादरी द्वारा दोनों संस्थाओं को विलय करके एक साथ मिलकर कार्य करने का प्रस्ताव हुआ।

समाज के बुद्धिजीवी वर्ग ने दोनों स्कूलों के विलय हेतु एक पंचायत करने का निर्णय लिया और पंच के नाम का प्रस्ताव दोनों से मांगा गया। परिणामस्वरूप 18 जुलाई, 1926 को 'जाट एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल' की मैनेजिंग कमेटी ने सर्वसम्मति से दो प्रमुख प्रस्ताव पारित किये, जो कि इस प्रकार थे :-

1. दोनों स्कूलों के विलय करने के बाद जो कमेटी बनेगी, उसमें चौधरी छाजूराम सरपंच और डॉ. रामजीलाल पंच होंगे। इसके साथ ही एक पंच 'जाट हीरोज मैमोरियल हाई स्कूल' की तरफ से लेकर पंचायत जो फैसला लेगी, वह मंजूर होगा।

2. दोनों स्कूलों के विलय के बाद 'जाट एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल' के संस्थापक चौधरी मातूराम हुड्डा, सांघी निवासी के खानदान से एक स्थायी मेम्बर मैनेजिंग कमेटी में लिया जाएगा और उसके बगैर कमेटी मान्य नहीं होगी।

चौधरी छोटूराम के 'जाट हीरोज मैमौरियल हाई स्कूल' की कमेटी ने 26 अगस्त, 1926 को बैठक की और अपने सचिव चौधरी लालचन्द को विलय कमेटी का पंच नियुक्त किया। इसके बाद 3 सितम्बर, 1926 को पंचायत और पंचायत के सरपंच चौधरी छाजूराम ने दोनों स्कूलों के विलय की घोषणा की।

इस प्रकार दोनों स्कूलों को मिलाकर एक शैक्षणिक संस्था बनी, 'जाट हीरोज़ मैमोरियल एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल, रोहतक।' इस स्कूल की कमेटी में सेठ छाजूराम को प्रधान, चौधरी मातूराम को उप-प्रधान और चौधरी लाल चन्द को सचिव बनाया गया।

इसी तरह चौधरी मातूराम ने शिक्षा के प्रचार-प्रसार करने के साथ ही शिक्षण संस्थानों के निर्माण में भी अह्म योगदान दिया।

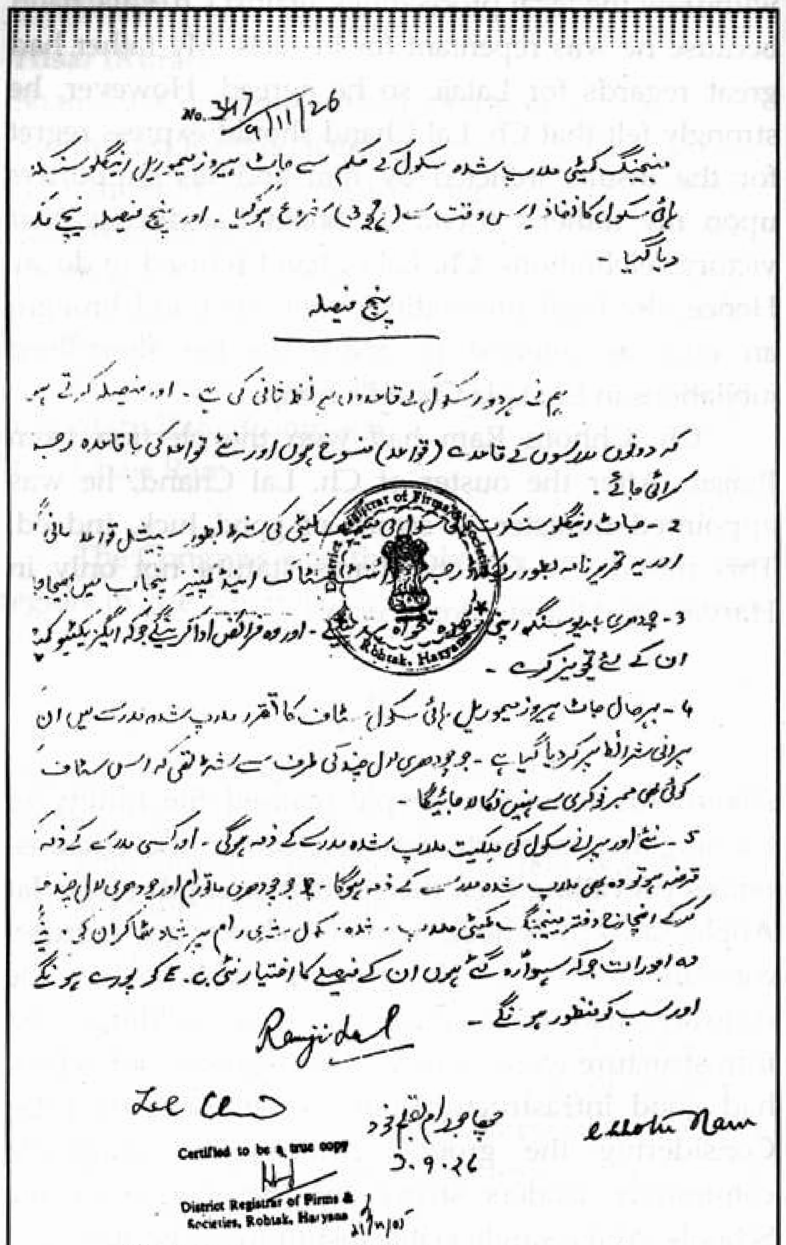

No. 347 9/11/26

Certified to be a true copy

District Registrar of Firms & Societies, Rohtak, Haryana

A historic document rel. to merger of Jat Schools, Rohtak, 1926

प्रथम पीढ़ी के आर्य समाजी

महर्षि दयानंद ने 30 अक्तूबर, 1875 को मुम्बई में 'आर्य समाज' की स्थापना की। इसके बाद यह पूरे भारत में फैला। उत्तरी भारत में इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। समाज को कुरीतियों, रूढ़ियों और अंधविश्वासों के अंधकार से निकालने के लिए चलाए जा रहे आर्य समाज के अभियान ने चौधरी मातूराम जैसे अनेक समाजसेवियों को बेहद प्रभावित किया। चौधरी मातूराम ने सन् 1881 में आर्य समाज को ग्रहण करके प्रथम पीढ़ी के आर्य समाजी बनने का गौरव हासिल किया। प्रथम पीढ़ी के अन्य आर्य समाजियों में पं. बस्तीराम, पं. लखपतराय, डॉ. रामजीलाल, चौधरी राजमल, चौधरी जुगलाल, पंडित शम्भूदत्त शामिल थे।

चौधरी मातूराम ने जैसे ही आर्य समाज को अपनाया और यज्ञोपवित (जनेऊ) धारण किया तो देहाती समाज ने बखूबी स्वागत किया। महिलाओं ने गीतों के जरिये चौधरी मातूराम को बधाईयां दीं और खुशियां मनाई। एक बानगी के तौर पर यह गीत स्वत: जुबान पर आ जाता है :

घर-घर बांटो मिठाई,
हे मातूराम आर्य हो गया।
रल मिल गाओ बधाई,
हे मातूराम आर्य हो गया।

जनेऊ धारण करने की ऐतिहासिक घटना

चौधरी मातूराम कट्टर आर्य समाजी थे। जब उन्होंने यज्ञोपवित (जनेऊ) धारण किया तो कुछ धर्मान्ध लोगों में हलचल मची। उन्होंने काशी से एक पुरोहित बुलवाया, जिसने आते ही गाँव खिडवाली में एक पंचायत करायी। पंचायत में उसने कहा,''जाट शूद्र होते हैं। उन्हें जनेऊ धारण करने का कोई अधिकार नहीं है। भगवान् इस बात से नाराज हो जायेंगे और आस-पास के इलाके पर मुसीबत आ जायेगी। इनका जनेऊ उतरवा दो।''

जब चौधरी मातूराम ने यह बात सुनी तो उनका उत्तर था कि ''जनेऊ किसी कीकर पर तो टंगा नहीं है, जिसे कोई भी उतार ले। मेरी गर्दन पर है, भाईयों के सामने गर्दन हाजिर है, इसे काट दो जनेऊ अपने आप उतर जायेगा।''

यह सुनकर पुरोहित ने दूसरा पैंतरा बदलते हुए कहा, ''इनको जाति से बाहर करके हुक्का-पानी बन्द कर दो'' इसपर चौधारी मातूराम बोले ''मैं तो किसी के घर बिना बुलाया जाता नहीं, उन्हीं के घर जाता हूँ जो घोड़ी की लगाम पकड़ कर घोड़ी से उतरने के लिए कहते हैं और स्वागत करते हैं।''

इसके बाद खिडवाली के कुछ लोग खड़े होकर कहने लगे ''जैलदार साहब! हमारे घर चलो, जिसका जो जी चाहे सो कर

ले।'' इस पर सभा बिखर गई और बहुत से लोग जनेऊ धारण कर आर्य समाज के सुधारवादी आन्दोलन में सम्मिलित हो गये।

चौधरी मातूराम ने आर्य समाज के अछूतोद्धार कार्यक्रम का प्रारम्भ गांव धामड़, जिला रोहतक में जुलाहों के घरों में उन्हीं के हाथों से बनाया हुआ खाना खाकर किया। उन्होंने समाज से अन्धविश्वास, छुआछूत, ऊँच-नीच आदि बुराईयों को मिटाने के लिए आजीवन संघर्ष किया। समाज के उत्थान के लिए सतत् संघर्ष, राष्ट्र के प्रति समर्पण, सत्यनिष्ठा, सदाचार एवं वैदिक धर्म, दर्शन और संस्कृति में अटल विश्वास आदि गुणों के कारण आपको 'चौधरी मातूराम आर्य' के नाम से जाना जाता है।

आर्य समाज के प्रसार में उल्लेखनीय योगदान

चौधरी मातूराम ने आर्य समाज के व्यापक प्रसार के लिए अपना असीम योगदान दिया। उन्होंने वर्ष 1884 से आरम्भ करके लाला लाजपतराय के साथ मिलकर आर्य समाजी गतिविधियों को गाँव-गाँव और जन-जन तक पहुंचाया, आर्य समाज की शाखाएं स्थापित करने से लेकर उसके प्रचार-प्रसार करने और देहात के लोगों को जोड़ने तक बड़ा उल्लेखनीय व अनुकरणीय योगदान दिया।

सामाजिक जागृति के अग्रदूत

चौधरी मातूराम ने सामाजिक जागरूकता के लिए अनेक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, कुप्रथाओं और अंधविश्वासों को मिटाने में अपना अह्म योगदान दिया, अनाथों, असहायों और अबलाओं के कल्याण के लिए अनेक कदम उठाए। सन् 1919 में 'राहचौन्धा' (नाईट ब्लाईडनैश) के प्रकोप से समाज बुरी तरह चपेट में आ गया। उस समय चौधरी मातूराम ने डॉक्टर रामजीलाल के साथ मिलकर इस प्रकोप को दूर करने में बेहद सराहनीय भूमिका निभाई।

वर्ष 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा अछूतोद्धार व दलितोत्थान का कार्यक्रम चलाया गया। इस अभियान में भी चौधरी मातूराम ने बढ़चढ़कर अपना योगदान दिया।

चौधरी मातूराम ने जिला बोर्ड के सदस्य चुने जाने पर बेगार प्रथा, कूढ़ी कमीनी टैक्स जैसी सामाजिक बुराईयों के खात्मे के लिए अनूठे कार्य किए। उन्होंने समाज से छुआछूत, जाति-पाति, ऊंच-नीच, भेदभाव जैसी सामाजिक बुराईयों को मिटाने के लिए दिन-रात एक कर दिया। उन्होंने स्वयं दलितों के घर खाना खाया और दूसरों को भी सामाजिक बराबरी लाने के लिए नसीहतें दीं। कुल मिलाकर चौधरी मातूराम सामाजिक जागृति के अग्रदूत बनकर उभरे।

बरौणा की ऐतिहासिक महापंचायत

7 मार्च, 1911 को गाँव बरोणा जिला रोहतक में सामाजिक सुधारों के लिए एक महापंचायत का आयोजन किया गया। इसमें दिल्ली, हिसार, रोहतक, गुड़गाँव और जीन्द रियासत के लगभग सभी गाँवों के जाट गोत्र के 50,000 प्रतिनिधि शामिल हुए थे।

इस महापंचायत की अध्यक्षता जटराणा गोत्र के चौधरी भीम सिंह ने की थी और इसके प्रबन्धन की जिम्मेदारी हुड्डा खाप के प्रतिनिधि चौधरी मातूराम और दहिया खाप के चौधरी पीरू सिंह ने बखूबी निभाई थी।

इस महापंचायत में समाज सुधार के लिए 28 प्रस्तावों को सर्वसम्मति से पारित किया गया था, जिसमें शिक्षा पर व्यापक जोर देने, उन्नति खेती के लिए अच्छे औजार पैदा करने, गन्दे नाच-गानों व मेलों से दूर रहने, औरतों की इज्जत सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक कदम उठाने, अनावश्यक रीति-रिवाजों से परहेज रखने, औरतों के शालीन पहनावे पर जोर देने, अनावश्यक खर्च करने से बचने, अश्लील नाच-गाने बंद करने, नशाखोरी बंद करने जैसे समाज-सुधार की बातें शामिल थीं।

इस ऐतिहासिक महापंचायत के इन 28 प्रस्तावों ने समाज नयी चेतना का संचार किया।

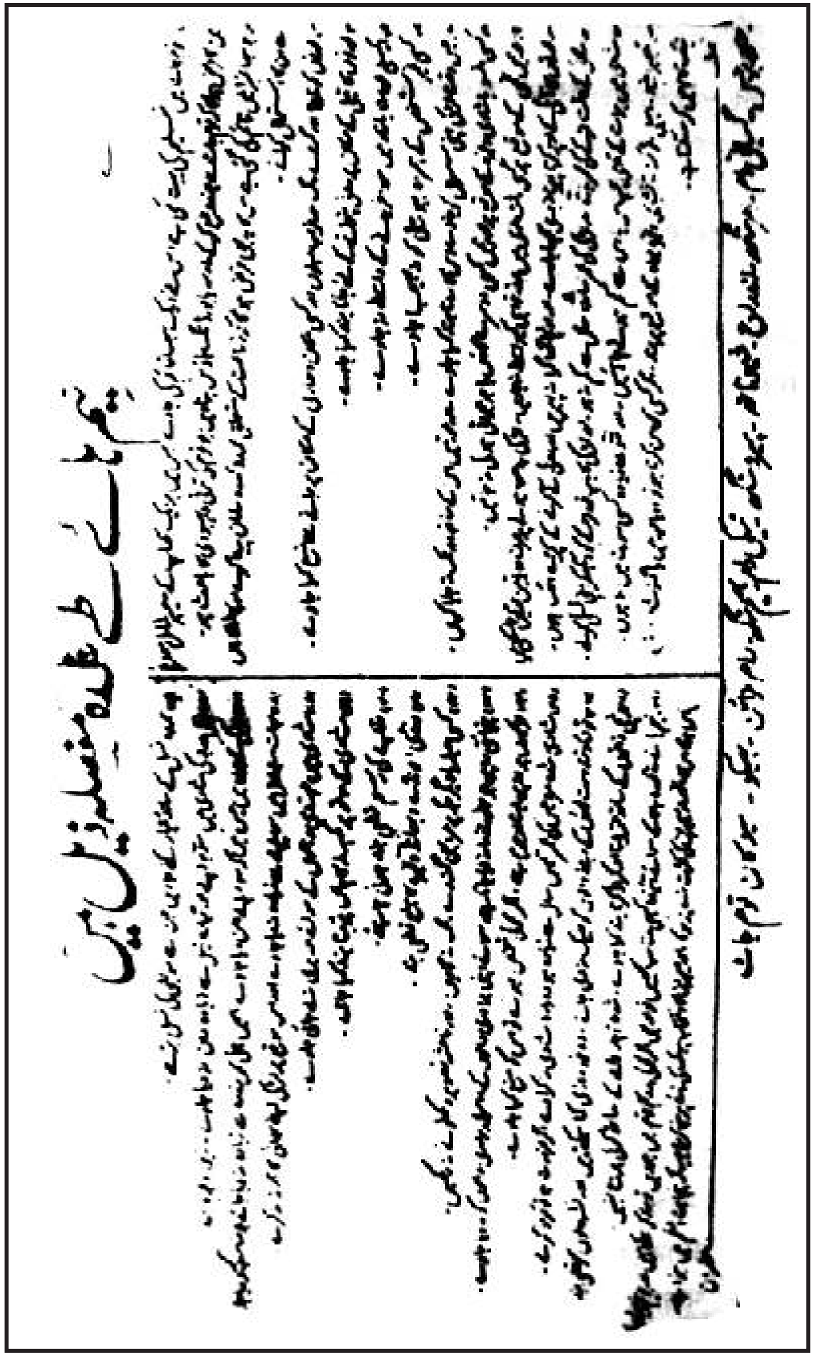

(29)

(30)

महाप्रयाण

जुलाई के प्रथम सप्ताह में परम देशभक्त और विशिष्ट समाजसेवी चौधरी मातूराम बीमार पड़ गए। उनका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन तेजी से गिरता चला गया। उनके इलाज के लिए हर संभव प्रयत्न किए गए। लेकिन, सब प्रयत्न विफल सिद्ध हुए और अंततः राष्ट्रसेवा में समर्पित इस देहाती संत का महाप्रयाण 14 जुलाई, 1942 को हो गया।

चौधरी मातूराम के देहावसान से हर कोई स्तब्ध रह गया। उनके चले जाने से पूरे समाज को भारी धक्का लगा और उन्हें अनाथ-सा हो जाने का बोध हुआ। उस समय उनके सुपुत्र चौधरी रणबीर सिंह राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में बेहद सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। पिता के निधन से चौधरी रणबीर सिंह एकदम टूट-सा गये थे।

चौधरी मातूराम ने जिस निःस्वार्थ भाव से समाज की सेवा की और जिस निर्भिकता के साथ समाज की रूढ़ियों व कुरीतियों के खिलाफ लड़े, उसे यह देश व समाज सदैव याद रखेगा।

पीढ़ी-दर- पीढ़ी राष्ट्रसेवा

राष्ट्रसेवा चौधरी मातूराम के वंश की परंपरा बन गई है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पित होने वाले उनके वंशजों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

चौधरी रणबीर सिंह : चौधरी रणबीर सिंह ने स्वतंत्रता आन्दोलन में तीन वर्ष की कठोर कैद और दो वर्ष की नज़रबन्दी की सजाएं झेलीं। संविधान सभा के सदस्य चुने गए। सात विभिन्न सदनों के सम्मानित सदस्य बने।

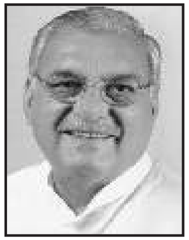

चौधरी भूपेन्द्र सिंह हुड्डा : चौधरी भूपेन्द्र सिंह हुड्डा 1991 में लोकसभा में पहुंचे। वे दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं लोकसभा सदस्य रहे। उन्होंने 2005 में रिकार्ड़ मत लेकर किलोई विधानसभा से जीत दर्ज की और हरियाणा के मुख्यमन्त्री बने। उनके नेतृत्व में दूसरी बार 2009 में हरियाणा में कांग्रेस सरकार बनी है। उन्हें लगातार सबसे अधिक समय तक मुख्यमंत्री बनने का अवसर मिला।

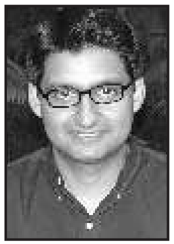

श्री दीपेन्द्र हुड्डा : श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा ने अपने पूर्वजों की विरासत को आगे बढ़ाते हुए दो बार वर्ष 2005 और 2009 में रिकार्ड़ मतों से रोहतक लोकसभा चुनाव जीता। चौदहवीं और पन्द्रहवीं लोकसभा में पहुंचे। वर्तमान में रोहतक के सांसद हैं।

श्रीमती मामकौर

पति का नाम - **चौधरी मातूराम आर्य**

पिता का नाम - सूबेदार जवाहर सिंह

माता का नाम - श्रीमती चुन्नी देवी

भाई-बहन :

1. जानकी देवी
2. उदेराम उर्फ खुशवन्त राय
3. सूबेदार दलीप सिंह
4. मामकौर
5. डॉ. मेजर जय गोपाल सिंह

जन्म स्थान : कानूनगो मोहल्ला, चरखी दादरी (भिवानी)

प्रकाशक
चौधरी रणबीर सिंह शोध पीठ
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक